अध्याय 26

अय्यूब का उत्तर (भाग 1)

कुछ विद्वान अध्याय 26 को अय्यूब का बताने के बजाय बिलदद का बताएंगे।[1] फ्रांसिस आइ. एंडरसन ने यह कहते हुए आपत्ति की:

> पूरी पुस्तक में अध्याय 26 बड़े विवरणों में एक है। श्रेष्ठ यह केवल यहोवा के भाषणों से बनता है, जो कि सही भी है। ... यह आश्चर्यजनक है कि बहुत से विद्वानों ने अय्यूब से इस भाषण के कुछ भाग चुराकर उन्हें उसके एक या दो मित्रों को दे दिए।[2]

एक टिप्पणी में, एंडरसन ने जोड़ा है, ''जब सर्वसम्मति की इतनी कम सम्भावना हो तो वचन को जैसा यह है वैसे ही रहने देना बेहतर हो सकता है, क्योंकि प्रमाण देने की सिरदर्दी उन लोगों की है कि जो इसे बदलना चाहते हैं और अब तक प्रमाण जैसा बदलता कुछ दिखाई नहीं देता।''[3]

अय्यूब के भाषण को दो पद्यों में बांटा जाता है। पहले, यह उसका है जो बिलदद ने पिछले अध्याय ने कहा था (26:1-4) कटु उत्तर है। इसके बाद सृष्टिकर्त्ता और उसकी सृष्टि का एक सुन्दर विवरण है (26:5-14)।

''तुम ने बिना समझ के सलाह दी है'' (26:1-4)

[1]तब अय्यूब ने कहा, [2]''निर्बल जन की तू ने कितनी बड़ी सहायता की, और जिसकी बाँह में सामर्थ्य नहीं, उसको तू ने कैसे सम्भाला है? [3]निर्बुद्धि मनुष्य को तू ने कितनी अच्छी सम्मति दी, और अपनी खरी बुद्धि कैसी भली भाँति प्रगट की है? [4]तू ने किसके हित के लिये बातें कहीं? और किसके मन की बातें तेरे मुँह से निकलीं?''

आयतें 1-3. अय्यूब ने बिलदद के भाषण के प्रति और तिरस्कार के साथ **कहा** निश्चय ही बिलदद और अन्य मित्रों ने **निर्बल जन की** कोई **सहायता** नहीं की थी और **जिसकी बांह में सामर्थ नहीं उसको सम्भाला** नहीं था। उनकी **सम्मति** और **खरी बुद्धि** अय्यूब की दुदर्शा के हवाले से पूरी तरह से निशाना चूक गई थी।

अय्यूब की बातों से उनके लिए चेतावनी का काम करने वाले होने चाहिए जो बड़ी पीड़ा में रहने वालों को परामर्श देने में जल्दबाजी करते हैं। जैसा पहले कहा गया था, मित्रों ने सात दिन तक अय्यूब के साथ खामोश बैठकर अपनी बड़ी समझ को दिखाया था (2:13)। केवल अपने मुंह खोलने पर ही, उन्होंने वह बोला जो परमेश्वर के सम्बन्ध में सही नहीं था (42:7)।

आयत 4. ''तू ने किसके हित के लिए बातें कहीं?'' जो कुछ बिलदद ने कहा था वह न तो अय्यूब पर लागू होता था और न ही उसकी विशेष परिस्थिति से मेल खाता था। **''किसके**

मन की बातें तेरे मुंह से निकलीं?'' ''मन'' के लिए शब्द, *n^eshamah* (*नेशामाह*), के लिए यहां इस्तेमाल हुआ ''आत्मा'' के लिए अधिक सामान्य शब्द, *nepesh* (*नेपेश*), का समानार्थी है। जॉन ई. हार्टले ने कहा, ''यह मानवीय जीवन का नियम है जो परमेश्वर के द्वारा दिया गया है'' (उत्पत्ति 2:7; अय्यूब 33:4)। यह ईश्वरीय प्रेरणा के लिए भी हो सकता है जो व्यक्ति के अंदर गहरी समझ को डालता है (तुलना 32:8)।''[4] निश्चय ही एलीपज को यह लगा कि उसे वह विशेष समझ थी (4:12-21)। परन्त अय्यूब ने मित्रों की समझ के स्रोत पर सवाल उठा दिए यानी यह कि यह परमेश्वर की ओर से नहीं थी!

''परमेश्वर समझ से परे महान है'' (26:5-14)

5''बहुत दिन के मरे हुए लोग भी जलनिधि और उसके निवासियों के तले तड़पते हैं।
6अधोलोक उसके सामने उघड़ा रहता है, और विनाश का स्थान ढक नहीं सकता। 7वह उत्तर
दिशा को निराधार फैलाए रहता है, और बिना टेक पृथ्वी को लटकाए रखता है। 8वह जल
को अपनी काली घटाओं में बाँध रखता, और बादल उसके बोझ से नहीं फटता। 9वह अपने
सिंहासन के सामने बादल फैलाकर उसको छिपाए रखता है। 10उजियाले और अन्धियारे के
बीच जहाँ सीमा बँधी है, वहाँ तक उसने जलनिधि की सीमा ठहरा रखी है। 11उसकी घुड़की
से आकाश के खम्भे थरथराकर चकित होते हैं। 12वह अपने बल से समुद्र को शान्त करता,
और अपनी बुद्धि से रहब को छेद देता है। 13उसकी श्वास से आकाशमण्डल स्वच्छ हो जाता
है, वह अपने हाथ से वेग भागनेवाले नाग को मार देता है। 14देखो, ये तो उसकी गति के
किनारे ही हैं; और उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है, फिर उसके पराक्रम
के गरजने का भेद कौन समझ सकता है?''

अय्यूब ने सृष्टिकर्त्ता और उसकी सृष्टि पर व्यापक चिंतन के साथ अपने उत्तर को समाप्त किया। ''पृथ्वी, जल, बादल, आकाश, आदि एक दर्जन से अधिक तत्वों की सूची दी गई। कई बार इन नामों से वे पुराने किस्से कहानियों में मिलते थे।''[5] इसे गलत न समझा जाए कि अय्यूब ने उन किस्से कहानियों को स्वीकार किया, बल्कि बेनाम प्रतीकात्मक अर्थ में उस अव्यवस्था को दर्शाते थे जिस पर यहोवा का अधिकार था।

आयतें 5, 6. ये आयतें मृतकों की स्थिति के अय्यूब के अंतिम विचार को दर्शाती हैं। इसमें मृत्यु की और मृतकों के संसार की शानदार समीक्षा है:

> मृत्यु सारी मनुष्यजाति - पर यानी गुलामों से लेकर राजकुमारों और राजाओं पर, छोटे से लेकर बड़े तक आने वाली है। यही वह स्थान है जहां पर ''दुष्ट लोग फिर दु:ख नहीं देते;/ और थके मांदे विश्राम पाते हैं'' (3:13-19)। अधोलोक वह स्थान है जहां से कोई लौटता नहीं है (7:8-10, 21), अंधियारे और घोर अंधकार का देश (10:21-22), जहां से लोग फिर नहीं उठते (14:10-12)। परन्तु रुकें; क्या वह फिर से उठ सकता है? यह एक अच्छा सवाल है (14:13)। इस विचार नष्ट कर दो, कि नहीं वह नहीं लौटेगा (आशा का खत्म होना) (16:2)। परन्तु क्योंकि मेरा ''छुड़ाने वाला जीवित है'' इसलिए शायद मेरे शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी, अर्थात बिना शरीर के मैं उसे

देखूंगा (19:25-27)। आशा और विश्वास डगमगाते और उठते हैं; दोनों बढ़ रहे हैं। सुखी और दु:खी में कोई फर्क नहीं क्योंकि ''वे दोनों एक समान मिट्टी में मिल जाते हैं'' (21:23-26)। अय्यूब को समझ में आ गया कि दुष्टों का जिनकी उसने बात की थी अंत यही है (24:19-20)। चर्चा के दौरान अलग-अलग बिंदुओं पर कही गई अय्यूब की अभिव्यक्तियों में पाठक को उसके मन में चलने वाली हलचल का पता चलता है जिसमें वह डूब जाता है और आशाहीन निराशा से आशा के उच्च स्तर पर उठ जाता है, जो यह प्रभाव छोड़ता है कि उसे ऐसा महसूस हो रहा है।[6]

मृतकों के संसार पर जिसे **जलनिधि**, **अधोलोक**, **और विनाश** के तीन नामों से सम्बोधित किया गया है, परमेश्वर का पूरा-पूरा नियन्त्रण है। कुछ लोगों का मत था कि अधोलोक संसार के नीचे के ''जल'' के नीचे कहीं था। ''विनाश'' (अबद्दोन) अर्थात को कहीं और ''मृत्यु,'' ''कब्र'' और ''विनाश लोक'' से जोड़ा गया है (28:22; भजन संहिता 88:11; नीतिवचन 15:11; 27:20)।

आयत 7. ''वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाए रहता है, और बिना टेक पृथ्वी को लटकाए रखता है।'' लगता नहीं है कि अय्यूब यहां पर खगोल विद्या की बात कर रहा हो। वेयन जैक्सन ने बड़ा अच्छा कहा है:

> इस पद्य को विज्ञान से पूर्व के ज्ञान परमेश्वर की प्रेरणा दिया गया मामला माना जाता है। कालांतर में इस लेखक [वेयन जैक्सन] ने स्वयं इस आयत का इतना इस्तेमाल किया है, परन्तु अब इसे इस्तेमाल करने से हिचकता है, और इसका कारण है। 9:22-24 में उसके स्पष्ट तौर पर *ईश्वरीय प्रेरणा-रहित* परमेश्वर के चरित्र चित्रण के साथ *इस* आयत (26:7) में अय्यूब के ''ईश्वरीय प्रेरणा की बात'' को कैसे मिलाया जा सकता है ?[7]

प्राचीन लोगों का मत था कि देवताओं का वास ''उत्तर'' में था। यहां पर ''उत्तर'' का इस्तेमाल दिशा के संकेत के लिए नहीं हुआ बल्कि यह ''ऊंचे से ऊंचे आकाश अर्थात परमेश्वर के सिंहासन के स्थान के लिए आकाशीय शब्द का काम करता है।''[8] इस प्रकार ''उत्तर'' सबसे ऊंचा आकाश, ''अधोलोक'' और ''अबद्दोन'' अर्थात सबसे निचली गहराइयों के विपरीत है (26:6)। ''निराधार'' (*thohu, थोहू*) वही शब्द है जिसका इस्तेमाल मूसा द्वारा परमेश्वर के सृजनात्मक कार्यों से पहले के संसार के वर्णन के लिए किया (उत्पत्ति 1:2)।

आयत 8. परमेश्वर **काली घटाओं** को जल से भर देता है पर फिर भी वे इसके बोझ से **फटती** नहीं कि उससे पूरी पृथ्वी पर प्रलय आ जाए। बादलों का बदलते रहना परमेश्वर की सामर्थ, डिज़ाइन और सुन्दर स्वभाव की पुष्टि करता है। भजन लिखने वाले ने लिखा है, ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है'' (भजन संहिता 19:1)।

आयत 9. ''वह अपने सिंहासन के सामने बादल फैलाकर उसपूर्णिमा; NASB **]को छिपाए रखता है।''** NASB के साथ कुछ संस्करणों (NIV; NRSV; NEB) में इब्रानी धर्मशास्त्र का अर्थ ''पूर्णिमा'' (*kese', केसे*) के सम्बन्ध में समझा गया है जबकि अन्य संस्करणों में ''सिंहासन'' (*kisse', किस्से*) है (KJV; ASV; NJPSV)। यदि ''पूर्णिमा''

सही है तो परमेश्वर ''पूर्णचंद्र को बादल के पीछे छिपाता है'' (TEV)। यदि ''सिंहासन'' सही है तो परमेश्वर ''अपने सिंहासन को बादलों से छिपाता है'' (NLT)। जिस कारण कोई मनुष्य उसकी ईश्वरीय महिमा को देख नहीं सकता है।

आयत 10. क्षितिज को देखने पर व्यक्ति **उजियाले और अंधियारे के बीच** देखता है **जहां सीमा बंधी है**। ''उजियाला'' क्षितिज के ऊपर और जल के नीचे दोनों जगह दिखाई दिए जाने वाले को जबकि ''अंधियारा'' दिखाई न देने वाले को दर्शाता है।

आयत 11. आकाश के खम्भे दूर के पहाड़ों के वर्णन के लिए जो आकाश को सहारा देते हुए से लगते हैं, कविता की भाषा हो सकती है। ये पहाड़ परमेश्वर की घुड़की से हिल जाते हैं चाहे वह घुड़की भूकम्प के द्वारा हो या बिजली के गर्जने की आवाज से (26:14)।

आयतें 12, 13. रहब और **वेग भागने वाले नाग** उन अराजक शक्तियों का प्रतीक हैं जिन्हें यहोवा की ओर से रोका गया है (9:13 पर टिप्पणियां देखें)। हेली ने कहा है, ''रहब को समुद्री दैत्य माना जाए जो समुद्र में हलचल पैदा करता है या मनुष्य का अहंकार जो समाज में तूफान ले आता है, परमेश्वर दोनों को शांत कर सकता है।''[9]

आयत 14. अय्यूब परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ पर चकित था। हम केवल **उसकी गति के किनारे** या **फुसफुसाहट** को ही जानते हैं। हम संसार को चलाने के परमेश्वर के कार्य को पूरी तरह से नहीं समझ सकते जिसमें उसमें हमें रखा है। हमारा एकमात्र उत्तर और भक्ति है, क्योंकि:

> ''उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिये बांधा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढे, कदाचित उसे टटोलकर पाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं'' (प्रेरितों 17:26, 27)।

प्रासंगिकता

हमारी समझ से परे (26:5-14)

26:5-14 में अय्यूब ने परमेश्वर की महानता और सृष्टि का वर्णन किया। अधोलोक अर्थात मृतकों के संसार पर जिसे जल के नीचे दिखाया गया है, परमेश्वर का पूरा-पूरा नियन्त्रण है (26:5, 6)। इसके विपरीत वह अपनी शक्ति को ऊंचे से ऊंचे आकाश अर्थात उस स्थान पर जहां उसका सिंहासन है भी इस्तेमाल करता है (26:7-10)। भूकम्प के द्वारा हो या अपनी आवाज की गूंज से, परमेश्वर पहाड़ों को हिलाकर, पहाड़ों पर (''आकाश के खम्भों'') अपने अधिकार को दिखाता है (26:11)। इसके अलावा उसके पास समुद्र को शांत करने की सामर्थ है, इसे आम तौर पर अव्यवस्था के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया है (26:12, 13)। सर्वेक्षण के रूप में अय्यूब ने दिखाया कि परमेश्वर हर चीज़ पर हाकिम है। उसने निष्कर्ष निकाला, ''देखो, ये तो उसकी गति के किनारे ही हैं; और उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है, फिर उसके पराक्रम के गरजने का भेद कौन समझ सकता है?'' (26:14)। अय्यूब यह कह रहा था कि जिन गतिविधियों का उसने वर्णन किया वे परमेश्वर की सृष्टि में उसके काम करने के बारे में बताने का आरम्भ भी नहीं थीं। वे तो केवल ''उसकी गति के किनारे'' थे। परमेश्वर सचमुच में हमारी समझ से बहुत परे है!

परमेश्वर की अद्‌भुत सामर्थ और सारी सृष्टि के ऊपर उसके नियन्त्रण पर विचार करना

सचमुच में हैरान करने वाला है। एक पल के लिए आइए लोगों के उन अलग-अलग समूहों पर ही विचार करें, जिनके ऊपर परमेश्वर शासन करता है।

आम जन। आम जनों के रूप में हमारे बारे में उसका ज्ञान दिमाग को चकरा देता है। परमेश्वर हमारे मन के हर विचार को और हमारे हर काम को जानता है। दाऊद ने लिखा, ''हे यहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है। तू मेरा उठना-बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भली-भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चाल-चलन का भेद जानता है'' (भजन संहिता 139:1-3)। यीशु ने कहा, ''तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, इसलिये डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो'' (लूका 12:7)।

कलीसिया। अपने लोगों अर्थात कलीसिया के परमेश्वर के ज्ञान पर विचार करना भी हैरान कर देने वाला है। पौलुस ने लिखा, ''प्रभु अपनों को पहचानता है'' (2 तीमुथियुस 2:19)। अन्य शब्दों में, परमेश्वर हर उस व्यक्ति को जानता है जिसका उद्धार मसीह में हुआ है। वह हमारे मांगने से पहले कि हमें किस चीज़ की आवश्यकता है अपने सब बच्चों को उससे प्रार्थना करने को कहता है (मत्ती 6:8)। परमेश्वर में हमारी सब प्रार्थनाओं को सुनने और हमारी बेहतरी के लिए जो सही हो करने की क्षमता है (1 यूहन्ना 5:14, 15)।

सब लोग। सब लोगों के परमेश्वर के ज्ञान पर विचार करना हमारी समझ से बहुत आगे है। इस समय, आकलनों से यह संकेत मिलता है कि संसार की जनसंख्या सात खरब लोगों के करीब है। फिर भी परमेश्वर हर व्यक्ति को उतना ही जानता है जितना वह हमें जानता है। इसके अलावा उसे हर किसी की चिंता है जो ''नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)।

जीवित और मरे हुए। अंत में यह समझना हमारी समझ से परे है कि परमेश्वर जीवतों और मरे हुओं सब को जो कभी इस संसार में रहा हो, जानता है। यह तथ्य इस बात से स्पष्ट है, कि मसीह के दोबारा आने पर परमेश्वर जीवतों और मरे हुओं सब का न्याय करेगा (यूहन्ना 5:28, 29; 2 कुरिन्थियों 5:10)।

जैसे पौलुस ने पुकारकर कहा, ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!'' (रोमियों 11:33)। परमेश्वर सचमुच में हमारी समझ से परे है। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 215; नॉर्मन सी. हेबल, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द कैम्ब्रिज बाइबल कॉमैंट्री (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1975), 135; और विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 472. [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 216. [3]वहीं, एन. 1. [4]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 363. [5]एंडरसन, 217. [6]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 228. [7]वेयन जैक्सन, *द बुक ऑफ़ अय्यूब* (अबिलेन, टेक्सस: क्वालिटी पब्लिकेशंस, 1983), 125. [8]हार्टले, 365. [9]हेली, 231.